Resource: अध्ययन नोट्स (बिब्लिका)

License Information

अध्ययन नोट्स (बिब्लिका) (Hindi) is based on: Biblica Study Notes, Biblica Inc., 2023, which is licensed under a CC BY-SA 4.0 license.

This PDF version is provided under the same license.

अध्ययन नोट्स (बिब्लिका)

EPH

इफिसियों 1:1–14, इफिसियों 1:15–23, इफिसियों 2:1–10, इफिसियों 2:11–22, इफिसियों 3:1–13, इफिसियों 3:14–21, इफिसियों 4:1–16, इफिसियों 4:17–5:20, इफिसियों 5:21–6:9, इफिसियों 6:10–24

इफिसियों 1:1–14

पौलुस ने विश्वासियों का अभिवादन किया और उन आध्यात्मिक आशीषों के बारे में बात की जो उन्होंने प्राप्त की थी।

विश्वासी परमेश्वर के संसार की बनाई गई योजना का हिस्सा थे। आशीषों ने उन्हें परमेश्वर की योजना को समझने में मदद की।

पौलुस ने पद 10 में परमेश्वर की योजना का वर्णन किया। परमेश्वर की योजना है कि स्वर्ग और पृथ्वी की सभी चीजों को मसीह के अधीन एकत्रित किया जाए। इसका अर्थ है कि यीशु सभी पर और हर चीज पर पूर्ण अधिकार रखेंगे।

वह पहले से ही स्वर्ग में शासन करते हैं। एक दिन वह पूरी तरह से स्वर्ग और पृथ्वी पर शासन करेंगे। जब ऐसा होगा, तो परमेश्वर द्वारा रचा गया संसार परमेश्वर से अलग नहीं रहेगा। परमेश्वर के सभी लोग पाप और मृत्यु की शक्ति से मुक्त हो जाएंगे।

यह वही योजना है जो परमेश्वर ने संसार की रचना से पहले बनाई थी। विश्वासियों का पहले से ही यीशु से संबंध है। वे मानते हैं कि वे प्रभु यीशु मसीह हैं। वे परमेश्वर के परिवार में लेपालक हैं ।

उनके अंदर और उनके बीच पवित्र आत्मा निवास करती हैं। परमेश्वर ने यह सब उनके लिए किया है क्योंकि वे उनसे प्रेम करते हैं।

इफिसियों 1:15–23

पौलुस ने इन विश्वासियों के विश्वास और प्रेम के बारे में सुना था।

वह चाहते थे कि विश्वासी जानें कि उन्होंने उनके लिए प्रार्थना की।

पौलुस ने प्रार्थना की कि वे परमेश्वर और परमेश्वर की सामर्थ को जानें। उन्होंने प्रार्थना की कि वे उस योजना को समझें जो परमेश्वर ने भविष्य के लिए बनाई है।

परमेश्वर की योजना यह है कि यीशु स्वर्ग और पृथ्वी पर पूरी तरह से शासन करें। पौलुस ने साहसपूर्वक कहा कि यीशु के पास किसी भी व्यक्ति या वस्तु से अधिक सामर्थ और अधिकार है। इसमें सभी मानव शासक शामिल हैं। इसमें सभी आध्यात्मिक प्राणी भी शामिल हैं।

यीशु पहले से ही कलीसिया के शासक हैं।

इफिसियों 2:1–10

लोगों के यीशु का अनुसरण करने से पहले, वे पाप द्वारा नियंत्रित होते हैं। पौलुस ने इसे मृत अवस्था में होना बताया। उनकी देह जीवित होती हैं परन्तु उनका आध्यात्मिक पक्ष मृत होता है।

वे शैतान के दास के रूप में रहते हैं। पौलुस ने शैतान को बुराई की आत्मिक शक्तियों का शासक कहा। पौलुस दुष्ट आत्मिक प्राणियों के बारे में बात कर रहे थे।

अपने आप में, लोग उस शक्ति को नहीं रोक सकते जो बुराई का उन पर प्रभाव डालती है। परमेश्वर उन्हें पाप से बचाते हैं। वह उन्हें नया जीवन देते हैं जो यीशु के माध्यम से आता है। परमेश्वर ऐसा इसलिए करते हैं क्योंकि वे दयालु और अनुग्रह और प्रेम से परिपूर्ण हैं।

यीशु ने क्रूस पर जो कार्य किया, वह दिखाता है कि परमेश्वर के पास कितना अनुग्रह है। परमेश्वर हमेशा से चाहते हैं कि लोग यीशु से संबंध रखें और जैसे यीशु ने जीवन जिया, वैसे ही वे भी जिएं। परमेश्वर चाहते हैं कि वे लोगों वो अच्छे कार्य करें जो यीशु ने लोगों को करने के लिए सिखाए।

इफिसियों 2:11–22

पौलुस जिन विश्वासियों को लिख रहे थे, उनमें से कुछ अन्यजाति थे। वे इस्राएल राष्ट्र के नागरिक नहीं थे। वे परमेश्वर से अलग रहते थे।

अन्य विश्वासी, जिनके लिए पौलुस लिख रहे थे, वे यहूदी थे। वे परमेश्वर और परमेश्वर की वाचाओं के बारे में जानते थे। फिर भी वे परमेश्वर से अलग रहते थे, क्योंकि उनके हृदय बदले नहीं थे। पौलुस ने इसी बात का उल्लेख किया, जब उन्होंने कहा कि वे केवल शारीरिक रूप से खतना किए गए थे।

यहूदी और अन्यजाति भी एक-दूसरे से अलग रहते थे। पौलुस ने इसे उनके बीच घृणा की दीवार के रूप में वर्णित किया। पवित्र आत्मा यहूदी और अन्यजातियों को यीशु पर विश्वास करने में मदद करने के लिए कार्य करता है। जब लोग यीशु पर विश्वास करते हैं, तो वे उनके हो जाते हैं। उनके होने का अर्थ है कि वे पिता के निकट लाए जाते हैं। यह पवित्र आत्मा के माध्यम से होता है।

सभी यहूदी और गैर-यहूदी जो यीशु से संबंधित हैं, वे स्वर्ग के नागरिक हैं। वे परमेश्वर के परिवार का हिस्सा हैं। यह उस परिवार या जाती से अधिक महत्वपूर्ण है जिसमें लोग जन्म लेते हैं। उन्हें एक-दूसरे से घृणा के कारण अलग नहीं होना चाहिए बल्कि शान्ति में एक साथ रहना चाहिए। यीशु उन्हें एक-दूसरे के साथ और परमेश्वर के साथ शान्ति प्रदान करते हैं।

विश्वासी इमारत में पत्थरों के समान होते हैं। सभी मिलकर वे मन्दिर के समान होते हैं और परमेश्वर उनके बीच निवास करते हैं।

इफिसियों 3:1–13

पौलुस बन्दीगृह में थे, हालाँकि उन्होंने कुछ गलत नहीं किया था। उन्हें प्रेरित के रूप में किए जा रहे कार्य के लिए बन्दीगृह में डाला गया था।

परमेश्वर ने पौलुस को अन्यजातियों के पास यीशु के बारे में सुसमाचार का प्रचार करने के लिए भेजा था। यह परमेश्वर की योजना को संसार में पूरा करने का हिस्सा था। परमेश्वर की योजना थी कि सृष्टि की सभी चीजों को मसीह के अधीन लाया जाए।

यह हमेशा से परमेश्वर की योजना थी, परन्तु लोगों ने इसे नहीं समझा था। स्वर्गीय लोक में आत्मिक प्राणी भी इसे नहीं समझ पाए थे। यही कारण है कि पौलुस ने इसे मसीह का रहस्य कहा। रहस्य यह था कि यीशु के द्वारा सभी लोग परमेश्वर के निकट आ सकते हैं।

परमेश्वर ने पौलुस को यह संदेश साझा करने के लिए अनुग्रह और सामर्थ दी। लोगों ने पौलुस को इसे निष्ठापूर्वक प्रचार करने के लिए बन्दीगृह में डाल दिया था। परन्तु पौलुस ने आशा नहीं खोई, भले ही वह कष्ट सह रहे थे। पौलुस ने परमेश्वर पर भरोसा किया कि भविष्य में वह अपनी महिमा और असीमित आशीषों को उनके साथ साझा करेंगे। पौलुस यहाँ धन की बात नहीं कर रहे थे, बल्कि आत्मिक आशीषों की बात कर रहे थे।

इफिसियों 3:14–21

अध्याय 2 में पौलुस ने वर्णन किया कि कैसे विश्वासी परमेश्वर के निकट हैं। पौलुस की प्रार्थना दिखाती है कि परमेश्वर विश्वासियों के कितने करीब हैं।

पवित्र आत्मा की सामर्थ विश्वासियों के भीतर गहराई में होती है। मसीह उनके हृदयों में निवास करते हैं। औरवे परमेश्वर की सभी आशीषों से परिपूर्ण होते हैं जो परमेश्वर उनके लिए रखते हैं।

परमेश्वर जिन चीजों से विश्वासियों को भरते हैं, उनमें से एक उनका प्रेम है। पौलुस ने मसीह के प्रेम को कुछ ऐसा बताया जो चौड़ा, लंबा, ऊँचा और गहरा है। परमेश्वर का प्रेम अनंत है और इसे मापा नहीं जा सकता।

पौलुस ने विश्वासियों के लिए अपनी प्रार्थना में साहसिक अनुरोध किए। पौलुस जानते थे कि परमेश्वर उनसे कहीं अधिक कर सकते हैं जितना उन्होंने माँगा। इसके लिए, पौलुस ने परमेश्वर की स्तुति की और उन्हें महिमा दी।

इफिसियों 4:1–16

पौलुस ने यह स्पष्ट किया कि परमेश्वर ही एकमात्र परमेश्वर हैं। वे हर चीज़ और हर व्यक्ति के ऊपर परमेश्वर हैं जो अस्तित्व में हैं। वे केवल कुछ समूहों या संसार के कुछ क्षेत्रों के परमेश्वर नहीं हैं।

जो सभी उनकी आराधना और सेवा करते हैं, वे सब एक साथ लाए जाते हैं। वे सभी यीशु में एक ही विश्वास साझा करते हैं। उनका बपतिस्मा दिखाता है कि वे सभी उन्हें प्रभु के रूप में मानते हैं। पवित्र आत्मा उनमें से प्रत्येक के अंदर निवास करते हैं। वे सभी इस आशा को साझा करते हैं कि भविष्य में परमेश्वर क्या करेंगे।

ये सभी चीज़ें जो विश्वासी साझा करते हैं, उन्हें एकजुट करती हैं। वे एक-दूसरे से इतने निकटता से जुड़े होते हैं कि वे एक देह के समान होते हैं। यह देह उस शान्ति के माध्यम से साथ बंधी होती है जो यीशु देते हैं। यह सत्य और प्रेम के माध्यम से साथ बंधी होती है।

प्रत्येक विश्वासी को वह कार्य करना चाहिए जो यीशु ने उन्हें दिया है। उन्हें अन्य विश्वासियों के प्रति कोमल, धैर्यवान और

विनम्र भी होना चाहिए। इससे मसीह की देह को मजबूत बने रहने में मदद मिलती है।

इफिसियों 4:17–5:20

पौलुस ने जीवन जीने के दो तरीके बताए। एक पुराना तरीका था जिसमें विश्वासियों ने पहले जीवन बिताया था। यह उन लोगों का तरीका है जो परमेश्वर पर विश्वास करने से इनकार करते हैं। यह तरीका पापपूर्ण इच्छाओं, कार्यों और शब्दों से चिह्नित है जो लोगों को नष्ट करते हैं।

पापपूर्ण इच्छाएँ क्रोध, घृणा और क्रोध की भावनाओं की ओर ले जाती हैं। ये इच्छाएँ लालच से भर देती हैं और अधिक से अधिक चीजें चाहने की ओर ले जाती हैं। पापपूर्ण कार्यों में चोरी करना, लड़ाई करना, यौन पाप करना, नशे में धुत होना और उग्र जीवन जीना शामिल है। पापपूर्ण शब्दों में झूठ बोलना और बुराई और मूर्खतापूर्ण बातों के बारे में बात करना शामिल है। पौलुस ने इन इच्छाओं, कार्यों और शब्दों को अंधकार के जीवन का हिस्सा बताया।

दूसरा जीने का तरीका वह है जो यीशु ने सिखाया। जो लोग इस नए जीवन को जीते हैं, वे उन इच्छाओं से भरे होते हैं जो अच्छी चीजों की ओर ले जाती हैं। वे दूसरों के प्रति कोमल और दयालु होते हैं और उन्हें क्षमा करते हैं। उनके कार्य दूसरों के लिए भलाई करते हैं। वे कड़ी मेहनत करते हैं और जरूरतमंदों को उदारता से देते हैं। उनके शब्दों से भी भलाई होती है। वे सत्य बोलते हैं, परमेश्वर का धन्यवाद करते हैं और दूसरों को प्रोत्साहित करते हैं। पौलुस ने इन इच्छाओं, कार्यों और शब्दों को प्रेम के जीवन का हिस्सा बताया। वे जीवन की ज्योति का हिस्सा हैं।

यह जीवन शैली विश्वासियों को एक देह के रूप में साथ रहने में मदद करती है। यह परमेश्वर की योजना का हिस्सा है कि वे सभी चीजों को यीशु के अधिकार के अधीन लाएँ।

इफिसियों 5:21–6:9

पौलुस ने सिखाया कि परमेश्वर के परिवार में लोगों को अपने मानव परिवार के साथ कैसा व्यवहार करना चाहिए। पौलुस के समय में, परिवारों में आमतौर पर पति, पत्नी, बच्चे और दास/दासी शामिल होते थे। परिवार में पुरुषों का सबसे अधिक अधिकार होता था। महिलाओं, बच्चों और दासों को उनकी आज्ञा का पालन करना पड़ता था।

फिर भी यीशु की प्रभु के रूप में सेवा करने से लोगों के पारिवारिक व्यवहार में बदलाव आया। उन्हें यीशु के उदाहरण का पालन करना पड़ा। यीशु सेवा करने वाले अगुवे हैं और उन्होंने अपने आप को दूसरों की भलाई के लिए बलिदान कर दिया । परिवार के प्रत्येक सदस्य को एक-दूसरे के साथ प्रेम और सम्मान से पेश आना था। परिवार में सबसे अधिक अधिकार रखने वाले यीशु थे।

पौलुस ने परमेश्वर को सभी विश्वासियों का स्वामी कहा। पौलुस ने विश्वासियों को याद दिलाया कि परमेश्वर किसी भी विश्वासी को दूसरे से अधिक महत्वपूर्ण नहीं मानते। पुरुष, महिलाएँ, बच्चे और दास सभी कलीसिया का हिस्सा थे। कलीसिया यीशु के लिए इतनी महत्वपूर्ण है कि पौलुस ने इस संबंध को विवाह के रूप में वर्णित किया। कलीसिया का यीशु के साथ निकटता से जुड़ना परमेश्वर की योजना का हिस्सा है। यह परमेश्वर की, पुरे संसार को बचाने की इच्छा को दर्शाता है।

इफिसियों 6:10–24

संसार के लिए दुष्ट की योजना बुरी है। यह परमेश्वर की उस योजना के विपरीत है जो स्वर्ग और पृथ्वी को यीशु के अधीन लाने के लिए है।

क्रूस पर, यीशु ने बुराई, पाप और मृत्यु की शक्तियों पर विजय प्राप्त की। यही वह शान्ति का सुसमाचार है जिसके बारे में पौलुस ने बात की थी। अभी तक यीशु पूरी पृथ्वी पर पूरी तरह से शासन नहीं कर रहे हैं। जब तक वह ऐसा नहीं करते, शैतान परमेश्वर की योजना को रोकने की कोशिश करता रहता है।

पौलुस ने इसे आध्यात्मिक युद्ध के रूप में वर्णित किया, जो बुराई की आध्यात्मिक शक्तियों और परमेश्वर के बीच है। परमेश्वर के लोग इस युद्ध का हिस्सा हैं। परमेश्वर उन्हें आध्यात्मिक कवच और हथियार देते हैं ताकि उनकी सहायता कर सकें। विश्वासी इस बात पर भरोसा कर सकते हैं कि परमेश्वर की सामर्थ उन्हें बुराई से बचा लेगी। परमेश्वर की सामर्थ उन्हें प्रार्थना करने में भी सक्षम बनाती है।

विश्वासियों की प्रार्थनाओं ने पौलुस को यीशु के बारे में साहसपूर्वक सुसमाचार साझा करने में मदद की। पौलुस ने अपनी पत्री का समापन विश्वासियों के लिए आशीष के साथ किया, जिनके लिए वे लिख रहे थे। आशीष ने उन्हें याद दिलाया कि वे कैसे परमेश्वर की योजना का हिस्सा बन सकते हैं। उन्होंने परमेश्वर से शान्ति, प्रेम और विश्वास प्राप्त किया। इससे उन्हें परिवार के रूप में एक साथ रहने की अनुमति मिली, जो यीशु से प्रेम करता है और उनकी सेवा करता है।